

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 11 July 2018 20:27

: 000000000 0000000 00 000000 00 000000000 00, 000000 000 000000 0000000 00 00
0000000000 00 000000 : "00 000 00 000000000000 00 00000000, 000 000000 00 000000
00000000000 000000 000" : 000 000000 00 000000 000 000000000 00000, 000000 0000
00000 000 00 000000 00000 :

0000 0000000 00000000000



00000000 : समाज तो सबरंग है कोई समाजसेवा, कोई रासरंग, कोई आनंद, कोई शोध, कोई निर्माण तो कोई धर्म-सत् संग आदिकृत् यों से लगातार समाज की उन नत में जुटा रहता है लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जनि होने अपना पूरा जीवन केवल अपराध के समर्पित कर दिया है उनके हत् या, खून-खूरेजी, आतंक, भय, लूट और डकैती जैसे घनौने कृत् यों में आनंद मलित है बेधड़कलोग ऐसे अपराधियों के कुख् यात माफिया या दुरदांत अपराधी कहते हैं, जबकि डरपोक देने वाले लोग उन हैं बाहुबली की उपाधि देते घूमते हैं पुलिस उनके सतत अपराधकि-माफियागरी के देखकर हसिद्रीशीट खोलकर थाने के सूचना पट्ट पर इनके नाम-पति का नाम-पता सहित दर्ज कर लेती है, ताकि आम आदमी इनकी कर्तूतों से वाकिफ हों, प्रशासन के भी पहचानने में सुभीता हो

आज यहां बात हो रही है जुरम की दुनिया के कुख्यात बादशाह ब्रजेश सहि की, जो लूट, हत्या, धमकी, नरसंहार का मुलजमि है ब्रजेश के यह सारे कसि से पुलिस की डायरी में भरे-संजोये हु है हसि ट्री-शीट बताती है कि कसि तरह ब्रजेश सहि और उसके परिवारी जनों ने पूरवांचल ही नहीं, पूरे यूपी, बिहार, छत् तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, मपी, उत् तराखंड समेत कई राज् यों में जरायम की दुनिया का सहिसन हासलि किया और अपराधकि गंदगी पर बैठकर पूंजीपतियों, दुकनदार, ट्रांसपोर्टर, केयला व्यापारियों के डरा धमककर अपनी तजिरी भरी

पुलिस हसि ट्रीशीट के अनुसार ब्रजेश सहि ने सक्रौरा कंड नरसंहार में दुधमुंहे बच्चे पर भी रहम नहीं किया और यमलोक पहुंचा दिया जिसके आतंकने भतीजों के भी बनि पूंजी का व्यापार दे दिया और दविंगत भाई के गले में वधायक का हार दे दिया कुनबे के मजबूत कर यह शातरिना अंदाज में पूरगट और गायब होता रहा और अंदर ही अंदर यूपी से बाहर दूसरे प्रदेशों में अपने आर्थकिसाम्राज्य के ब ता रहा यहां इसके भतीजे इसके नाम के भुना कर आगे ब ते रहे अपने तीन दशकके अपराधकि जीवन में ब्रजेश ठेके से अरबों क्माता रहा इसके नाम का आतंक ऐसा रहा कि हर ब व्यापार में इसके क्मीशन चाह था जो इंकर करता उसकी अंतमि तथि भी तय हो जाती थी

खैर समय बदला और कुख्यात चरम पर हुई तो बस नाम ही काफी है ब्रजेश ने सोचा कि जब टेरर तो बन चुका है तो क्यों न भाई-भतीजे की तरह नाम के आगे माननीय लगवा लूं इसी मक्सद के अंजाम देने के ली ब्रजेश ताना बाना बुनने लगा मयाबी तब मली जब चंदौली के मूल नवासी कस्वजातीय कद्दावर नेता जो इनका सब राज जानते हु भी इनका 'नाथ' बनने के तैयार हो ग वो वर्तमान में वो केन्द्रीय और 'घर'के मंत्री है

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 11 July 2018 20:27

सूत्रों के माने तो इसी योजना के तहत □ कदशकपूर्व दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने उ□ीसा से अरुण सहि उर्फ बृजेश सहि के गरिफ्तार किया। यह गरिफ्तारी किसी नाटक से कम नहीं था।

खैर गरिफ्तारी के बाद हर जगह यह गरिफ्तारी चर्चा में रही। बाद में बृजेश के वाराणसी के सेंटरल जेल में रखा गया। समय के साथ बृजेश ने योजना के तहत अपनी पत्नी के ' भारी ले-देकर ' □ क पार्टी से □ म□ लसी बनाया। बाद में उस पार्टी में भाव न मल्लिने पर चन्दौली के सैयदराजा से चुनाव ल□। मगर करो□ी रूपये पानी की तरह बहाने के बाद भी नरिदल मनोज सहि डब्लू से मुँह की खा गया। उसके बाद स्थानीय नकिय चुनाव में करो□ी रूपये पानी की तरह बहाने और 'नाथ' के अदृश्य समर्थन के बाद सपा प्रत्याशी मीना सहि से 1986 मतों से बृजेश ने जीत दर्ज की। और यहीं से मान या न मान है क मेरा जबरन सम्मान की शुरुआत हुई □

□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ :-

□□□□ □□□ □□□□□

□ म□ लसी बनते ही बृजेश के नाम के साथ माननीय शब्द ऐसे जु□ गया। सूत्रों के माने तो □ म□ लसी बनते ही अपने टेरेर के धार और कली कमाई के व्यापार बनाने के ल□। बृजेश ने अपने गुरगो के कम पर लगा दिया। □ क तो मनिस्टर 'नाथ'क साथ ऊपर से माननीय क दर्जा। यही कारण है क सत्तासीन सरकार इस माफिया के ल□। आंखें मुंद कर प□ी रहने लगी। लोगों के माने तो इसी क नाजायज फायदा उठा बृजेश ने अपने मकसद के अंजाम देने के ल□। येन केन प्रकारेण बीमारी क बहाना बना जेल से पूर्व के मुकदमों के प्रभावति करने और वसूली ठेके के ल□। इलाज की आ□ में बी□ चयू में डेरा डाल दिया। जब लम्बे समय तक हॉस्पिटल में प□ रहने की खबर वाराणसी के अखबारों के हुई तो जाहिर सी बात है लोकतांत्रिकि खम्भा ने अपना फर्ज नभिया और बृजेश के इलाज पर सवाल ख□ होने लगे। इससे तल्लिमलियाये माफिया मास्टर यानी बृजेश ने उन अखबारों के अर्दब और दवाब में लेने के ल□। मानहानि क नोटिस भेज दिया।

आम तौर पर सामान्य लोग कहते घूमते रहते हैं क इन्हें अखबारों के नोटिस से कोई फर्क नहीं प□ ता है। क्योंकि मान उसी क है जो सम्मानति हो और जो हसिस्ट्रीशीटर हो उसक मान सम्मान कैसा और क्यों..? अभी कुछ दिनों पहले ही वाराणसी जल्लि के □ क वधायक के बीजेपी अध्यक्ष ने □ क सवाल के जवाब में 'चोर' कह दा। तो जिस □ मलसी की पूरी जवानी जदिगानी वसूली, रंगदारी, अपराध में गुजरी हो उसक कैसा मान कैसी हानि..? बल्कि उसे तो अपने पूर्व के कर्मो के ल□। उन पी□ तियों जो इसके अपराध कर्मो की वजह से अपनो के खो चुके हैं उनसे माफी मांगनी चाह□। आप माफिया से माननीय हो सकते हैं मगर आपसे लुटे पट्टे बर्बाद हु□ और उन वधिवाओं की सुनी मांग चीख चीख कर आपके माफिया मर्डरर ही कहेगा क्योंकि आप सपेद शर्ट पर सैक□ों खून के धब्बे हैं जो इस जीवन में आपके मान नहीं दला सकते

Written by कुमार सौवीर
Wednesday, 11 July 2018 20:27

और ख्यात और कुख्यात में जनता फ़क़ जानती है आप जनता और अखबार से जबरन मान चाहते हैं तो आपको भ्रम है कम से कम मुझसे और मेरे अखबार से यह उम्मीद तो नहीं होनी चाहिए।

हम तो अपराध अपराधियों भ्रष्टाचार भ्रष्टाचारियों के खिलाफ़ यून ही मुखर रहेंगे चाहे भले ही अंजाम गौरी लंके जैसा हो (000000 : 00000 000000 00 000)